डॉ. रॉबर्ट वानॉय, किंग्स लेक्चर 14

© 2012, डॉ. रॉबर्ट वानॉय, डॉ. पेरी फिलिप्स, टेड हिल्डेब्रांट

एलिय्याह और एलीशा, पूर्ण कालक्रम

2. घ. एलिय्याह और एलीशा का कार्य

1) एलिय्याह की पहली उपस्थिति - 1 राजा 17:1-6 2) ज़ेरोफाथ में विधवा - 1 राजा 17:7-24

हमने पिछले सप्ताह पूरा सत्र कार्य के अंतर्गत पहले दो उप-बिंदुओं पर बिताया एलिय्याह और एलीशा का. वह आपकी रूपरेखा के पृष्ठ दो पर, अहाब के अंतर्गत है। "2.डी" है: "एलिय्याह और एलीशा का कार्य।" "1" है: "एलिय्याह की पहली उपस्थिति, 1 राजा 17:1-6।" और "2" है: "सारपत की विधवा, 1 राजा 17:7-24।" उस सामग्री के प्रति एक मुक्तिदायक ऐतिहासिक दृष्टिकोण को चित्रित करने का प्रयास करने के लिए मैंने जानबूझकर उन दो खंडों पर बहुत समय लिया। जैसा कि आप याद करते हैं, मैंने मुख्य रूप से एमबी वानट वीर की पुस्तक, *माई गॉड इज़ याह्वेह के विचारों का उपयोग करते हुए काम किया*, जो एलिजा की चर्चा है।

जैसा कि उल्लेख किया गया था, हम यहां अपनी रूपरेखा के पृष्ठ दो पर हैं। हमें अभी लंबा रास्ता तय करना है और हमारे पास केवल दो सत्र हैं। मैंने निर्णय लिया कि मैं सामग्री पर अधिक विस्तार से चर्चा नहीं करूँगा; हालाँकि, मैं कुछ टिप्पणियाँ करना चाहता हूँ, लेकिन बस कुछ ही। मैं एलिय्याह और एलीशा के कार्य के बारे में अधिक चर्चा नहीं करूँगा। हम पृष्ठ दो के नीचे "ई" की ओर आगे बढ़ेंगे। इसके तुरंत बाद करकर की लड़ाई में अहाब की भूमिका है।

3) कार्मेल पर्वत पर बाल के भविष्यवक्ताओं के साथ एलिय्याह का आमना-सामना - 1 राजा 184) ईज़ेबेल से एलिय्याह की उड़ान लेकिन ऐसा करने से पहले, "3" है: "कार्मेल पर्वत पर बाल के भविष्यवक्ताओं के साथ एलिय्याह का आमना-सामना, 1 राजा 18।" मुझे लगता है कि यह शायद एलिय्याह की सभी कहानियों का सबसे परिचित अध्याय है जहां स्वर्ग से आग

गिर रही है। मैं आज रात उस पर समय नहीं बिताना चाहता। तीन या चार एलिजा की उड़ान है, कार्मेल में उस जीत के तुरंत बाद, जब ईज़ेबेल एलिजा को धमकी देती है। वह अपने जीवन के डर से भागता है और माउंट होर ईब, जो माउंट सिनाई है, पर जाता है और यह 1 राजा 19:1-8 में है।

5. होरेब पर्वत पर एलिय्याह - 1 राजा 19:1-18 टी फिर "5" है: "होरेब पर्वत पर एलिय्याह।" मैं वहां बस कुछ संक्षिप्त टिप्पणियाँ करना चाहता हूँ; वह 1 राजा 9:1-18 है। आपको याद है जब वह होरेब पहुंचता है: वहां हवा, भूकंप, आग और फिर शांत, छोटी आवाज आती है। मुझे लगता है कि इसका उद्देश्य एलिय्याह को यह समझाना है कि ईश्वर हमेशा शानदार तरीकों से काम नहीं करता है।

एलिय्याह बहुत निराश है। बेशक, माउंट कार्मेल में भगवान ने बहुत शानदार तरीके से काम किया। परन्तु जब परमेश्वर वायु, आग, और भूकम्प को अपने आगे से चलाता है, तो आप श्लोक 11 में पढ़ते हैं: " यहोवा ने कहा, 'बाहर निकल और यहोवा के साम्हने पहाड़ पर खड़ा हो, क्योंकि यहोवा चारों ओर है।" के पास से गुज़रना।' तब यहोवा के साम्हने एक बड़ी और प्रचण्ड आँधी ने पहाड़ों को फाड़ डाला, और चट्टानों को चकनाचूर कर दिया, परन्तु यहोवा उस आन्धी में न था। आँधी के बाद भूकम्प हुआ, परन्तु यहोवा उस भूकम्प में न था। भूकम्प के बाद आग निकली, परन्तु यहोवा उस आग में न था। और आग के बाद एक हल्की फुसफुसाहट आई। जब एलिय्याह ने यह सुना, तो उस ने अपना कपड़ा अपने मुंह पर खींच लिया, और बाहर निकलकर गुफा के मुंह पर खड़ा हो गया। तब एक आवाज ने उस से कहा, 'एलियाह, तू यहां क्या कर रहा है?'

यदि आप जलती हुई झाड़ी के समय को याद करेंगे, और मूसा के पास जाएंगे, तो भगवान झाड़ी की आग में थे। सिनाई में इज़राइल में ईश्वर की अभिव्यक्ति के दौरान, वह गड़गड़ाहट और बिजली में था - ये स्वयं की शक्तिशाली अभिव्यक्तियाँ थीं। लेकिन यहाँ यह वह शानदार घटना नहीं है जिसमें ईश्वर मौजूद था, बल्कि शांत, छोटी आवाज़ में था।

तब प्रभु ने एलिय्याह को इज़राइल वापस जाने और तीन काम करने का आदेश दिया।

और मुझे लगता है कि यह ध्यान देने योग्य है कि तीन चीज़ें क्या हैं। पद 15 कहता है, “प्रभु ने उससे कहा, 'जिस मार्ग से तू आया था उसी मार्ग से लौट जा। जब तुम वहां पहुंचो, तो अराम पर राजा हजाएल का अभिषेक करो।" यह नंबर एक है। और दो है: "इस्राएल पर राजा निमशी के पुत्र येहू का अभिषेक करो।" और तीसरा है: " अपने उत्तराधिकारी के रूप में भविष्यवक्ता होने के लिए हाबिल महोला में से शापात के पुत्र एलीशा का अभिषेक करें।" अत: एलिय्याह को जो तीन काम करने को कहा गया, वह हजाएल का अभिषेक करना, येहू का अभिषेक करना, और एलीशा का अभिषेक करना।

क) एलीशा का अभिषेक अब जब हम राजाओं की कथा में आगे बढ़ते हैं, तो हम पाते हैं कि ये तीन चीजें की गईं, लेकिन शायद उस तरह से नहीं, जिस तरह से आपने इस कमीशन से उम्मीद की होगी कि एलिय्याह को यहां दिया गया है। मैं आगे देखना चाहूँगा और उन तरीकों का उल्लेख करना चाहूँगा जिनसे इन्हें पूरा किया गया। सबसे पहले जो पूरा किया जाना था वह आखिरी था जिसका उल्लेख किया गया था, और वह एलिजा का उत्तराधिकारी बनने के लिए एलीशा का अभिषेक है। अन्य को उसके बाद अंजाम दिया गया। और आप इसकी उपलब्धि 2 राजा 2 में पाते हैं, और चूँकि मैं एलीशा के जीवन और मंत्रालय के बारे में आगे चर्चा नहीं करने जा रहा हूँ, आप 2 राजा 2 की प्रतीक्षा कर सकते हैं। अध्याय 2 वह है जहाँ एलिय्याह को स्वर्ग में ले जाया गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि एलीशा को पता है कि एलिय्याह का प्रस्थान निकट है। दूसरे पद में एलिय्याह एलीशा से कहता है, “यहाँ ठहरो; यहोवा ने मुझे बेतेल भेजा है।” परन्तु एलीशा ने कहा, यहोवा के जीवन की शपथ, और तेरे जीवन की शपथ, मैं तुझे न छोड़ूंगा। इसलिये वे बेतेल को चले गये। और वे बेतेल से यरीहो को गए। पद 6 में एलिय्याह ने उस से कहा, “यहाँ ठहर; यहोवा ने मुझे यरदन के पास भेजा है, और उस ने उत्तर दिया, यहोवा के जीवन की शपथ, और तेरे जीवन की शपथ, मैं तुझे न छोड़ूंगा। तब वे दोनों आगे चले, और एलिय्याह ने अपने वस्त्र से यरदन का जल दो भाग कर दिया, और वे आगे चले।

फिर श्लोक 9 में, मैं चाहता हूँ कि आप श्लोक 9 पर ध्यान दें: "'मुझे बताओ, इससे

पहले कि मैं तुमसे छीन लिया जाऊँ, मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूँ?' एलीशा ने उत्तर दिया, 'मुझे अपनी आत्मा का दोगुना हिस्सा विरासत में दो।' 'आपने एक कठिन बात पूछी है,' एलीजा ने कहा, 'फिर भी अगर आप मुझे तब देखेंगे जब मैं आपसे छीन लिया जाऊंगा, तो यह आपका होगा - अन्यथा, यह नहीं होगा।" सवाल यह है: जब एलीशा कहता है तो वह क्या मांग रहा था , "मुझे अपनी आत्मा का दोगुना हिस्सा विरासत में दो"? मुझे नहीं लगता कि एलीशा एलिय्याह से दोगुना प्रभावी या दोगुना अच्छा बनने के लिए कह रही है। मुझे लगता है कि अभिव्यक्ति "दोगुना हिस्सा" इज़राइल में विरासत के कानूनों से संबंधित है जहां सबसे बड़े बेटे को दोगुना हिस्सा मिलता था। और मुझे लगता है कि एलीशा उस शब्दावली का उपयोग करके एलिजा का उत्तराधिकारी बनने की मांग कर रहा है। और एलिय्याह कहता है, तू ने बड़ी कठिन बात पूछी है, तौभी यदि मैं तेरे पास से उठा लिया जाऊंगा, तब तू मुझे देखेगा, तो वह तेरा हो जाएगा। बेशक, एलीशा ने उसे देखा था, और जब एलिय्याह को स्वर्ग में ले जाया गया, तो एलीशा ने अपना चोला उठा लिया। वह जॉर्डन में वापस जाता है, और नदी उसके लिए अलग हो जाती है, जैसा कि उसने पहले एलिय्याह के लिए किया था। ऐसा प्रतीत होता है कि यह एक प्रदर्शन है कि वह वास्तव में उत्तराधिकारी है।

यह एलिय्याह को भविष्यवक्ता के रूप में सफल होने के लिए एलीशा का अभिषेक करने के लिए दिए गए तीसरे आदेश की पूर्ति है। लेकिन यह बिल्कुल शाब्दिक अर्थ में नहीं किया गया था कि एलीशा पर तेल डालने, उस अर्थ में उसका अभिषेक करने का कोई रिकॉर्ड नहीं है। लेकिन निश्चित रूप से घटनाओं के इस क्रम में एलीशा को एलिय्याह का उत्तराधिकारी दिखाया गया है।

एलिय्याह का स्वर्गारोहण इस अध्याय में एक और श्लोक है जिस पर मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं, और वह श्लोक 12 है। जब एलिय्याह को बवंडर में स्वर्ग में ले जाया गया, तो आपने पढ़ा कि अग्नि का एक रथ प्रकट हुआ और अग्नि के घोड़े प्रकट हुए जिन्होंने दोनों को अलग कर दिया उनमें से एलिय्याह बवण्डर में स्वर्ग पर चढ़ गया। लेकिन

पद 12 कहता है, "एलीशा ने यह देखा और चिल्लाकर कहा, 'मेरे पिता! मेरे पिता! इस्राएल के रथ और सवार!' और एलीशा ने उसे फिर कभी नहीं देखा।" यह अभिव्यक्ति, "मेरे पिता, मेरे पिता! इस्राएल के रथ और घुड़सवार।" वह किस बारे में बात कर रहा है? मुझे लगता है कि अभिव्यक्ति को अक्सर गलत समझा जाता है - मुझे नहीं लगता कि अभिव्यक्ति का उन घोड़ों और आग के रथों से सीधे तौर पर कोई लेना-देना है जो उसे स्वर्ग तक ले गए - कम से कम सीधे तौर पर नहीं। निःसंदेह, वे उस अर्थ में संदर्भ में एक साथ आते हैं। लेकिन इसका मतलब क्या है? क्या बोल रहा था? मुझे लगता है कि वह जो कह रहा है वह यह है कि "एलिजा, तुम राष्ट्र की ताकत या गढ़ हो।" देखो, एलिय्याह स्वर्ग पर उठा लिया गया है, और एलीशा चिल्लाकर कहता है, "हे मेरे पिता! मेरे पिता! इस्राएल के रथ और घुड़सवार!" एलिय्याह इस्राएल का रथ और घुड़सवार था। बेशक, शब्द के भौतिक अर्थ में नहीं, लेकिन इज़राइल की ताकत उनके सैन्य प्रतिष्ठान में नहीं थी। इस्राएल की ताकत प्रभु के प्रति उनकी निष्ठा, और प्रभु में उनका भरोसा और प्रभु के प्रति उनकी आज्ञाकारिता में थी। और एलिय्याह लोगों को आज्ञाकारिता और वाचा की वफादारी के लिए वापस बुला रहा था । तो तब एलिय्याह इस्राएल की राष्ट्र की ताकत, रथ और घुड़सवार का गढ़ था। मुझे लगता है कि यह स्पष्ट है कि मुद्दा यही है। इसका वास्तव में उन रथों से कोई सीधा संबंध नहीं है जो उसे स्वर्ग तक ले गए।

मुझे लगता है कि यह स्पष्ट है कि यही बात है क्योंकि यही बात बाद में एलीशा के बारे में भी कही गई है। जब वह मर जाता है, यदि आप 2 राजा 13:14 को देखें, तो आप पढ़ते हैं: "एलीशा उस बीमारी से पीड़ित था जिससे वह मर गया था। इस्राएल का राजा यहोआश उसे देखने के लिये नीचे गया और उसके लिये रोया।" और वह क्या कहता है? "मेरे पिता! मेरे पिता!" वह रोया। "इस्राएल के रथ और सवार!" और एलीशा का वर्णन उसी अभिव्यक्ति के साथ किया गया है, और निस्संदेह, एलीशा को रथ में स्वर्ग तक नहीं ले जाया गया था। और इसलिए ऐसा लगता है कि यही अभिव्यक्ति का महत्व है, और यह निश्चित रूप से एक महत्वपूर्ण विचार है।

इज़राइल की ताकत उसके सैन्य प्रतिष्ठान पर निर्भर नहीं थी; इस्राएल की शक्ति

उसकी वाचा के प्रति आज्ञाकारिता में निहित है। एलिय्याह ही वह व्यक्ति था जिसने इस्राएल को वाचा का पालन करने के लिए बुलाया था। सही मायने में वह ही देश की ताकत थे, रथों की संख्या नहीं। ठीक है, लेकिन यह 2 राजा 2 है। यह उन तीन कार्यों में से तीसरे की पूर्ति, या कार्यान्वयन है, जो एलिय्याह को दिए गए थे।

ख) सीरिया के हजाएल का अभिषेक 2 राजा 8, श्लोक 7-15 में आपको उन तीन कार्यों में से पहला कार्य पूरा करना है, और वह है हजाएल का अभिषेक। 2 राजा 8 में—बेशक, यह स्वयं एलिजा द्वारा नहीं किया गया है, यह उसके उत्तराधिकारी एलीशा द्वारा किया गया है। 2 राजा 8, श्लोक 7 और निम्नलिखित में, आप पढ़ते हैं: "एलीशा दमिश्क को गया, और अराम का राजा बेन्हदद बीमार था। जब राजा को यह समाचार मिला, कि परमेश्वर का भक्त यहां तक आया है, तब उस ने हजाएल से कहा, अपने साथ एक भेंट ले कर परमेश्वर के भक्त से भेंट करने को जा। उसके द्वारा यहोवा से परामर्श करो; उससे पूछो, "क्या मैं इस बीमारी से ठीक हो जाऊँगा?" वह भीतर गया और उसके साम्हने खड़ा होकर कहने लगा, तेरे पुत्र अराम के राजा बेन्हदद ने मुझे यह पूछने को भेजा है, कि क्या मैं इस रोग से ठीक हो जाऊंगा? ठीक हो जाओ।" फिर भी, प्रभु ने मुझे बताया है कि वह वास्तव में मर जाएगा।' वह उसे तब तक घूरता रहा जब तक हजाएल शर्मिंदा नहीं हो गया। तब परमेश्वर का जन रोने लगा। 'महाराज क्यों रो रहे हैं?' हेज़ेल ने पूछा। उसने उत्तर दिया, ' क्योंकि मैं जानता हूं कि तुम इस्राएलियों को कितना नुकसान पहुंचाओगे।' 'तू उनके गढ़वाले स्थानों में आग लगा देगा, उनके जवानों को तलवार से मार डालेगा, उनके छोटे बच्चों को भूमि पर पटक देगा, और उनकी गर्भवती स्त्रियों को चीर डालेगा।' हाजाएल ने कहा, 'आपका नौकर, एक मात्र कुत्ता, ऐसी उपलब्धि कैसे हासिल कर सकता है?' एलीशा ने उत्तर दिया, ' यहोवा ने मुझे दिखाया है कि तुम अराम के राजा बनोगे।' तब हजाएल एलीशा को छोड़कर अपने स्वामी के पास लौट गया। जब बेन-हदद ने पूछा, 'एलीशा ने तुमसे क्या कहा?' हेजाएल ने जवाब दिया, 'उन्होंने मुझसे कहा कि तुम निश्चित रूप से ठीक हो जाओगे।' परन्तु अगले दिन उसने एक मोटा कपड़ा लिया, उसे पानी में भिगोया और राजा के चेहरे पर फैलाया, ताकि वह मर

जाए। तब हजाएल उसके स्थान पर राजा हुआ।”

तो फिर, आप हजाएल के औपचारिक अभिषेक के साथ इसे पूरा नहीं कर सकते, लेकिन एलीशा हजाएल से कहता है "प्रभु ने मुझ पर प्रकट किया है कि आप राजा होंगे।" तब हजाएल बेन-हदद की हत्या करने का बीड़ा अपने ऊपर ले लेता है और वह सफल हो जाता है। हज़ाएल इसराइल का उत्पीड़क था, क्योंकि सीरियाई लोगों के तहत हज़ाएल ने बाद के समय में इज़राइल के कई उत्तरी हिस्सों पर हमला किया था। लेकिन यह दूसरे कार्य की पूर्ति है।

3) एलीशा ने भविष्यवक्ताओं के पुत्रों में से एक को इस्राएल के राजा येहू का अभिषेक करने के लिए नियुक्त किया - 2 राजा 9 तीसरा है 2 राजा 9. यहां एलीशा ने भविष्यवक्ताओं के पुत्रों में से एक को इस्राएल के राजा येहू का अभिषेक करने के लिए नियुक्त किया। और आपने इसके बारे में अध्याय 9 में पढ़ा - नोटिस श्लोक 3 - एलीशा कहता है, "तब कुप्पी ले लो और उसके सिर पर तेल डालो और घोषणा करो, 'यहोवा यों कहता है: मैं इस्राएल पर राजा होने के लिए तेरा अभिषेक करता हूं।' फिर दरवाज़ा खोलो और भागो; देर मत करो!” और श्लोक 13 के माध्यम से आपको उसकी उपलब्धि का विवरण मिल गया है। फिर येहू ने जोराम के खिलाफ साजिश रची, जो उस समय राजा था, और आपके पास येहू की वह बहुत ही महत्वपूर्ण क्रांति है जिसमें उसने जोराम के साथ-साथ अहज्याह को भी मार डाला । फिर वह बाल पूजा को मिटा देता है और उत्तर में एक नया राजवंश स्थापित करता है। और इस प्रकार यह उन कार्यों में से तीसरे की सिद्धि है। आइए देखें, वह सब होरेब में एलिय्याह के अधीन था। होरेब में उन्हें तीन कार्य दिए गए, और उसके बाद हम देखते हैं कि उन तीन कार्यों को किस प्रकार पूरा किया गया।

इ। करकर की लड़ाई में अहाब की भूमिका और उसके तुरंत बाद उसकी मृत्यु अब, जैसा कि मैंने उल्लेख किया है, मैं एलिजा और एलीशा के तहत इन बाकी उप-बिंदुओं पर चर्चा नहीं करने जा रहा हूं। आइए अहाब के अंतर्गत "ई" पर जाएं। "कारकर की लड़ाई में

अहाब की भूमिका और उसके तुरंत बाद उसकी मृत्यु।" मुझे यकीन है कि हम सभी इस तथ्य से परिचित हैं कि उत्तरी साम्राज्य 722 ईसा पूर्व में अश्शूरियों के हाथों निर्वासन में चला गया था। अश्शूरियों ने उत्तरी साम्राज्य पर हमला किया और 722 में इसे जीत लिया। अब यह अहाब के समय से बहुत दूर है। लेकिन 722 से पहले, कई इज़राइली राजाओं की अश्शूरियों के साथ मुठभेड़ हुई थी - दूसरे शब्दों में, 722 में सामरिया के पतन के समय से पहले उत्तरी साम्राज्य और अश्शूरियों के बीच संघर्ष का एक लंबा इतिहास है।

अहाब पहला इज़राइली है जिसका नाम असीरियन लेखन में उल्लेख किया गया है, और यह संदर्भ शाल्मनेसर III द्वारा दिया गया है, जिसने अपने एक शिलालेख में कहा है कि उसने ओरांटेस नदी पर एक लड़ाई में राजाओं के गठबंधन को हराया था। ओरांटेस नदी उत्तर-पश्चिमी सीरिया में है। उस क्षेत्र में शल्मनेसेर का कहना है कि उसने वहां एक युद्ध में राजाओं के गठबंधन को हराया था, जिनमें से एक अहाब भी था। राजाओं के उस गठबंधन में योगदान देने वाले के रूप में उनका नाम उल्लेख किया गया है। शल्मनेसर का कहना है, कि "इस्राएली अहाब ने गठबंधन में 2,000 रथ और 10,000 पैदल सैनिकों का योगदान दिया। दमिश्क के हदद-एजेर ने 700 रथ और 700 घुड़सवारों का योगदान दिया।" तो आप देख सकते हैं कि दमिश्क के राजा ने अहाब की तुलना में काफी कम योगदान दिया। अब, यह एक महत्वपूर्ण लड़ाई है; हालाँकि पुराने नियम में इसका उल्लेख नहीं है—पुराने नियम में अहाब के वृत्तांत में, इसका कोई उल्लेख नहीं है।

कालानुक्रमिक मुद्दे और क़रकर की लड़ाई

लेकिन यह एक महत्वपूर्ण घटना है क्योंकि भले ही इसका उल्लेख नहीं किया गया है, गणना और तर्क के कुछ तरीकों से यह हिब्रू राजाओं के कालक्रम के लिए पूर्ण तिथियां स्थापित करने के लिए एक महत्वपूर्ण घटना बन जाती है। मेरे कहने का मतलब यह है: पुराने नियम के पाठ में हमारे पास सापेक्ष तिथियां हैं - हम जानते हैं कि एक निश्चित राजा ने कुछ वर्षों तक शासन किया, और अगले राजा ने 15 वर्षों तक, और अगले 3 वर्षों तक, और अगले 40 वर्षों तक शासन किया। तो हम जानते हैं कि इनमें से प्रत्येक राजा ने उत्तर और

दक्षिण दोनों में, एक-दूसरे का अनुसरण करते हुए, कितने समय तक उत्तराधिकार में शासन किया। लेकिन सवाल यह है कि जहां तक पूर्ण कालक्रम प्राप्त करने की बात है, आप किंग्स की किताब में मिलने वाले सापेक्ष कालक्रम को किस बिंदु पर किसी ऐसी चीज़ में जोड़ सकते हैं जो आपको पूर्ण कालक्रम के लिए एक निश्चित तारीख दे दे? तो आप कह सकते हैं कि येहू की क्रांति जिसके बारे में हमने अभी कुछ मिनट पहले बात की थी, वह 841 ईसा पूर्व की है, खैर, हम कैसे जानते हैं कि यह 841 है? हमें इस तरह की चीजों के लिए एक निश्चित तारीख कैसे मिलेगी?

बहुत पहले पाठ्यक्रम की शुरुआत में मैंने आपसे *ज़ोंडरवन बाइबिल इनसाइक्लोपीडिया में जे. बार्टन पायने का वह लेख पढ़ने के लिए कहा था*। मुझे लगता है कि आपको कालक्रम की कुछ समस्याओं और विचारों का कुछ अंदाज़ा हो गया होगा। इसके अलावा, अब आप विशेष रूप से इन अंतिम पठन अनुभागों में इसका सामना कर रहे हैं क्योंकि डेटिंग के संबंध में कुछ वास्तविक समस्याएं बाद के राजाओं में हैं। मैं इतना चिंतित नहीं हूं कि आप सभी तर्कों का विवरण तक पालन करें - यह जटिल है, और एक्सपोजिटर की बाइबिल *टिप्पणी की चर्चा का पालन करने के लिए आपको वास्तव में इस पर काम करना होगा*। मैं आपको एडविन आर. थिएले की *ए क्रोनोलॉजी ऑफ़ द हिब्रू किंग्स से*क़रकर, या करकर की लड़ाई और साम्राज्य काल की पूर्ण डेटिंग के लिए इसके महत्व के बारे में एक पेज पढ़ने देता हूँ। पेज 29 पर—वैसे, यह किताब एक तरह से उनके बड़े काम, *द मिस्टीरियस नंबर्स ऑफ द हिब्रू किंग्स का लोकप्रियकरण और संक्षिप्त सारांश है*, और उन्होंने इसे इस छोटी सी किताब में आसुत कर दिया, जो दुर्भाग्य से अब बाहर है प्रिंट का—लेकिन मुझे लगता है कि यह बहुत उपयोगी चीज़ है। लेकिन पृष्ठ 29 पर वह यह कहता है: "असीरिया में राजाओं की तारीखें स्थापित करने में प्राथमिक महत्व असीरियन उपनाम सूची है।" आप उस शब्द से परिचित होते हैं; असीरियन उपनाम सूची। यह उन महत्वपूर्ण अधिकारियों की सूची है जिनके नाम पर वर्षों का नामकरण किया गया। टी टोपी अश्शूरियों के लिए एक प्रथा थी। हमारी प्रथा एक युग की तारीख बताने की है; यह इक्कीसवीं सदी का वर्ष 2012 है। असीरियन वर्ष के लिए एक नाम देते थे, और वे या तो एक

राजा या उच्च अधिकारी या किसी ज्ञात व्यक्ति का नाम देते थे, और वे केवल एक वर्ष के लिए उसका नाम निर्दिष्ट करते थे। नाम एक उपनाम है. और इसलिए आपके पास इन सभी नामों की यह उपनाम सूची है, और प्रत्येक नाम एक वर्ष के लिए है। वह असीरियन उपनाम सूची है।

असीरियन उपनाम सूची 892-648 ईसा पूर्व थिएल से उद्धृत: "यह महत्वपूर्ण अधिकारियों की एक सूची है, जिनके नाम पर वर्षों का नाम रखा गया था। प्रत्येक वर्ष का नाम राज्य के किसी अधिकारी के नाम पर रखने की प्रथा थी। यह राजा, फील्ड मार्शल, मुख्य प्याला, उच्च चैंबरलेन, या अश्शूर प्रांत का छोटा व्यक्ति हो सकता है। जिस व्यक्ति के नाम पर वर्ष का नाम रखा गया वह उपनाम था। और वह वर्ष नामांकित वर्ष था। इस प्रकार, यदि हमारे पास उपनामों की लगातार सूची है, तो हमारे पास असीरियन वर्षों की लगातार सूची है। यह तथ्य कि असीरियन ने उपनामों की सूचियों को संरक्षित किया है, असीरियन इतिहास के सटीक पुनर्निर्माण में प्रमुख महत्व रखता है। ऐसी सूचियाँ वर्ष 892 से 648 तक अस्तित्व में हैं।" यह समय की एक लंबी अवधि है - ये 892 से 648 तक, हर साल के लिए नामों की लंबी सूची है।

"और ये वर्ष हिब्रू राजतंत्रों की अधिकांश अवधि को ओवरलैप करते हैं। उपनाम सूची में विशेष रुचि उन गोलियों की संख्या है जो न केवल उपनामों के नाम देती हैं, बल्कि उनके शीर्षक और स्थिति और विभिन्न महाकाव्यों के दौरान प्रमुख घटनाएं भी बताती हैं। ऐसी सूचियाँ 853 से 703 तक उपलब्ध हैं, इसलिए आपके पास न केवल यह नाम सूची है, बल्कि आपके पास इन वर्षों के भीतर घटित महत्वपूर्ण घटनाएँ भी हैं - 853 से 703 तक। और इन्हें असीरियन एपोनिम कैनन कहा जाता है, इसलिए वह वर्ष जब उर सदालू लुज़ानु के गवर्नर, उपनाम थे - देखें कि यह एक नामांकित वर्ष होगा - उर सदालु वर्ष का नाम होगा। और वह यहाँ का गवर्नर था. लेकिन जिस वर्ष उर सदलु का नाम रखा गया, उस वर्ष के रिकॉर्ड में कहा गया है: 'आशेर शहर में विद्रोह हुआ था; सेमनु माह में सूर्य ग्रहण हुआ। खगोलीय गणना ने यह तारीख 15 जून 763 तय की है क्योंकि इसमें उल्लेख है कि उनके

वर्ष में यह ग्रहण लगा था। खगोलीय गणनाएँ हमें बता सकती हैं कि वह कौन सा वर्ष रहा होगा, लेकिन समसामयिक और गणितीय रूप से, आप गिनती करके तारीख निर्धारित कर सकते हैं। यह अंकन असीरियन कालक्रम के लिए अथाह मूल्य का है। 763 में उर सदलु की स्थापना की तारीख के लिए, सूची में हर दूसरे नाम को भी इसी तरह तय किया जा सकता है।

तो आप देखिए, वे इस तारीख से आगे और पीछे जाते हैं और बताते हैं कि यह कौन सा वर्ष है। तो निःसंदेह, आप उस वर्ष को ग्रहण में बाँध सकते हैं। इस प्रकार हमारे पास 892 से 648 तक असीरियन इतिहास में प्रत्येक वर्ष के लिए पूर्ण, विश्वसनीय तिथियां हैं क्योंकि आप उस खगोलीय गणना से नाम सूची में काम कर सकते हैं, और उससे असीरियन रिकॉर्ड में वर्षों की इस पूरी सूची के लिए निश्चित तिथियां प्राप्त कर सकते हैं।

अब इस बात पर वापस आते हैं: "हिब्रू राजाओं के नाम स्थापित करने के लिए एक बड़ा महत्व कुछ निश्चित वर्षों का है जहां असीरियन और इज़राइल के साथ संपर्क हुआ था। इनमें से एक डायन असुर का उपनाम है। तारीख उस उपनाम वर्ष की 853 है। शलेम्नेसर III का छठा वर्ष जिसमें उसने पश्चिमी राजाओं के एक समूह के खिलाफ भूमध्य साम्राज्य में क़रकार की लड़ाई लड़ी, और जिनमें से एक का नाम इज़राइल का अहाब है। इस प्रकार हम जानते हैं कि अहाब 853 में जीवित था। बारह साल बाद, अदद मेमानी के नाम में, जो 841 है, शल्मनेसेर III का 18वां वर्ष , असीरियन अभिलेखों में कहा गया है कि शल्मनेसेर को राजा इया-औ से श्रद्धांजलि मिलती थी जो इसराइल के शासक थे। . विद्वानों ने लंबे समय से इस राजा की पहचान येहू के रूप में की है। इस प्रकार, 841 को इज़राइली कालक्रम में मुख्य तारीख दर्ज की गई थी। असीरियन कालक्रम के अनुसार, 853 में शल्मनेसर के 6 वें वर्ष के बीच 12 वर्ष थे, जब उसने क़रकार में अहाब के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी; और हिब्रू कालक्रम के अनुसार, अहाब की मृत्यु और येहू के उत्तराधिकार के बीच भी 12 वर्ष थे। अर्थात्, अहाब के लिए दो आधिकारिक वर्ष, या एक वास्तविक वर्ष, और जोराम के लिए 12 आधिकारिक वर्ष, या 11 वास्तविक वर्ष। इस प्रकार हमारे पास अहाब की मृत्यु के वर्ष के लिए 853 हैं, और 841 उस वर्ष के रूप में हैं जब येहू ने अपना शासन शुरू किया था। जिसका अर्थ यह भी है कि क़रकर की लड़ाई 12 वर्षों के कारण अहाब के

जीवन के अंतिम वर्ष में होनी थी। लेकिन इससे आपको इज़राइली कालक्रम में दो निश्चित तारीखें मिलती हैं। बेशक, एक बार जब आपको वे निश्चित तिथियां मिल जाती हैं, तो आप अन्य तिथियां प्राप्त करने के लिए राजाओं की कालानुक्रमिक प्रणाली के भीतर काम कर सकते हैं। और ये वास्तव में वे हुक हैं जिन पर पुराने नियम का कालक्रम आधारित है। ”

निर्गमन की तिथि पर वापस आने का एकमात्र तरीका इन बिंदुओं से सुलैमान के शासनकाल के चौथे वर्ष (1 राजा 6:1) तक काम करना है, जो निर्गमन के 480 वर्ष बाद था, इसलिए 480 वर्षों में आपको मिलता है निर्गमन को लौटें। और फिर निर्गमन से आपको इब्राहीम, इसहाक, जैकब, जोसेफ के जीवन के संबंधों का पता लगाना होगा, और मूल रूप से उन कालक्रमों को पितृसत्ताओं तक ले जाना होगा। और निःसंदेह, आप आंतरिक, बाइबिल संबंधी डेटा का उपयोग करके उन्हें अब्राहम तक वापस ला सकते हैं। आप इब्राहीम से पहले नहीं पहुँच सकते क्योंकि आपके पास कालानुक्रमिक गणना के लिए पर्याप्त इतिहास नहीं है। तो शायद यह कालक्रम पर थोड़ा प्रकाश डालता है।

अहाब की मृत्यु मुझे पता है कि मैंने उल्लेख किया था कि अहाब के हिस्से में क़रकर की यह लड़ाई है, जो इस कारण से पुराने नियम के इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना बन जाती है, इस तथ्य के बावजूद कि पुराने नियम में इसका उल्लेख नहीं है। अब, जहां तक अहाब की मृत्यु की बात है, तो ऐसा लगता है कि उसके जीवन के अंतिम वर्ष में चीजें तेजी से आगे बढ़ी होंगी क्योंकि वह राजाओं के गठबंधन में है, और अश्शूरियों से लड़ रहा है; लेकिन आपको याद है कि उसकी मृत्यु कैसे हुई - उसकी मृत्यु तब हुई जब वह यहोशापात के साथ किसी ऐसे व्यक्ति के खिलाफ लड़ने गया जो संभवतः उस गठबंधन का एक अन्य सदस्य था। उसने उस समय दमिश्क के राजा बेन-हदद के विरुद्ध लड़ाई लड़ी। यह 1 राजा 22 है। मुझे नहीं पता कि हमने उसका नाम बताया है या नहीं, लेकिन वह अराम का राजा था। आयत 29 पढ़ें : “तब इस्राएल का राजा और यहूदा का राजा यहोशापात गिलाद के रामोत पर चढ़ गए। इस्राएल के राजा ने यहोशापात से कहा, मैं भेष बदलकर युद्ध में उतरूंगा, परन्तु तुम अपना राजसी वस्त्र पहिने रहना। इसलिये इस्राएल का राजा भेष

बदलकर युद्ध में गया। अराम के राजा ने अपने बत्तीस रथप्रधानोंको यह आज्ञा दी, कि इस्राएल के राजा को छोड़, छोटे वा बड़े किसी से मत लड़ो। जब रथ नायकों ने यहोशापात को देखा, तो उन्होंने सोचा, 'निश्चित रूप से यह इस्राएल का राजा है।' इसलिये वे उस पर आक्रमण करने को मुड़े, परन्तु जब यहोशापात ने चिल्लाकर कहा, तब रथपतियों ने देखा, कि वह इस्राएल का राजा नहीं है, और उसका पीछा करना बन्द कर दिया। परन्तु किसी ने बेतरतीब ढंग से अपना धनुष खींच लिया और इस्राएल के राजा को उसके कवच के बीच से मारा। और फिर उनकी मृत्यु हो गई। मैंने सोचा कि यह बेन-हदद था लेकिन ऐसा लगता है कि इस अध्याय में उसका उल्लेख नहीं है।

लेकिन अध्याय 20, पद 1, बेन-हदद सामरिया पर हमला करता है। मुझे लगता है कि यह वही था। 1 राजा 22:1 कहता है, "तीन वर्ष तक अराम और इस्राएल के बीच कोई युद्ध नहीं हुआ," परन्तु तीसरे वर्ष अहाब दमिश्क के विरुद्ध यहोशापात के साथ मिल गया।

लेकिन किसी भी मामले में, ऐसा लगता है कि जो हुआ वह यह है कि शायद अहाब शल्मनेसर के खिलाफ अपनी सफलता की कमी का बदला लेने की कोशिश कर रहा है। शल्मनेसर 853 की उस लड़ाई, क़रकर की लड़ाई, में जीत का दावा करता है, लेकिन आप उसकी बातों पर कितना भरोसा कर सकते हैं, यह निश्चित रूप से सवाल का विषय है। ऐसा नहीं लगता कि कोई उल्लेखनीय जीत हुई है - वह नीचे नहीं आया और दक्षिण में किसी भी क्षेत्र पर कब्ज़ा नहीं किया। लेकिन निश्चित तौर पर उन्होंने इस गठबंधन से मुंह मोड़ लिया होगा. लेकिन वहां जो कुछ भी हुआ, उसने शायद दमिश्क को कमजोर कर दिया, जिससे अहाब को यह सोचने में मदद मिली, “ठीक है, मैं कम से कम उस क्षेत्र का कुछ हिस्सा वापस पा सकता हूं जो दमिश्क ने इज़राइल से छीन लिया है; हम गिलियड का शासन प्राप्त करेंगे।” तो उस वर्ष के भीतर ऐसा लगता है कि अहाब यहोशापात के साथ मिल गया, और उन्होंने रामोथ-गिलियड को पुनः प्राप्त करने की कोशिश करने के लिए बेन-हदद की सेना पर हमला किया। भविष्यवक्ता मीकायाह की चेतावनी को नजरअंदाज किए जाने के बावजूद, मीकायाह ने जैसा कहा था वैसा ही हुआ: अहाब मारा गया।

3. अहाब के बेटे क) अहज्याह ठीक है, चलिए पेज दो के नीचे और फिर पेज तीन के शीर्ष पर चलते हैं। "अहाब के बेटे" - और आपने देखा कि मेरे पास दो उप-बिंदु हैं: उसके दो बेटे हैं जिन्होंने शासन किया - अहज्याह और यहोराम। सबसे पहले, 1 राजा 22:40 में अहज्याह, फिर 2 राजा 1:18 में; और यह 2 इतिहास 20:25-37 में समान है। आपने 1 राजा 22:51 में पढ़ा, अहाब की मृत्यु के बाद, अहज्याह यहूदा में यहोशापात के सत्रहवें वर्ष में राज्य करने लगा, और दो वर्ष तक राज्य करता रहा। यह एक छोटा शासनकाल था. उसने अपने पिता अहाब की नीतियों को जारी रखा। "उसने यहोवा की दृष्टि में बुरा किया, क्योंकि वह अपने माता-पिता और नबात के पुत्र यारोबाम की सी चाल चला, जिस ने इस्राएल से पाप कराया। पद 53: "उसने बाल की सेवा और आराधना की और इस्राएल के परमेश्वर यहोवा को क्रोधित किया, जैसा उसके पिता ने किया था।"

अब, कुछ अन्य बातें हैं जो हम उसके बारे में जानते हैं - उसने यहोशापात के साथ एक शिपिंग गठबंधन स्थापित करने का प्रयास किया; मुझे लगता है कि आपने इसके बारे में पिछले सप्ताह के असाइनमेंट में पढ़ा है। जब वे जहाज़ नष्ट हो गए तो इसका अंत आपदा में हुआ। यह 1 राजा 22:48 में है: "अब यहोशापात ने व्यापारिक जहाजों का एक बेड़ा बनाया सोने के लिए ओफिर तक जाने के लिए, लेकिन उन्होंने कभी यात्रा नहीं की - वे एस्योन गेबर में बर्बाद हो गए। पद 49: "उस समय अहाब के पुत्र अहज्याह ने यहोशापात से कहा, 'मेरे लोगों को तेरे संग चलने दे,' परन्तु यहोशापात ने इन्कार किया।" अहज्याह की मृत्यु हो गई - और यह 2 राजाओं की पुस्तक में ओवरलैप होता है - अपने घर की छत से गिरने के बाद। और यहीं पर उसने एक्रोन के बाल को यह देखने के लिए भेजा कि क्या वह ठीक हो जाएगा। जब वह एक बुतपरस्त देवता से रहस्योद्घाटन की तलाश में था तो उसका एलिजा से सामना हुआ, और उसे बताया गया कि वह मर जाएगा। और वह 2 राजाओं के पहले अध्याय में है। उनका कोई पुत्र नहीं था; आपने इसे 2 राजाओं 1 के पद 17 में पढ़ा। "अतः वह यहोवा के उस वचन के अनुसार मर गया जो एलिय्याह ने कहा था। अहज्याह के कोई पुत्र न होने के कारण यहूदा के राजा यहोशापात के पुत्र यहोराम के दूसरे वर्ष में योराम उसके स्थान पर राजा हुआ। इसलिए उसके कोई पुत्र नहीं था और उसका भाई योराम, जो

उस समय अहाब का पुत्र था, उसका उत्तराधिकारी बना।

बी) जोराम - 2 राजा 3:1-9:25 तो वह है "बी," "जोराम, 2 राजा 3:1-9:25।" मेरे इतनी दूर जाने का कारण यह है कि आपने यहां एलीशा और एलीशा की कहानियों के बारे में बहुत सारी सामग्री डाली है। लेकिन यहोराम अहाब का एक और पुत्र था, और आपने अध्याय 3 के श्लोक 2 में पढ़ा कि "उसने यहोवा की दृष्टि में तो बुरा किया, परन्तु अपने माता-पिता के समान नहीं।" ऐसा लगता है कि जोराम के साथ अहाब और अहज्याह की तुलना में सुधार हुआ है। "उसने बाल के उस पवित्र पत्थर से छुटकारा पा लिया जिसे उसके पिता ने बनवाया था। तौभी वह नबात के पुत्र यारोबाम के पापोंमें, जो उस ने इस्राएल से करवाए थे, लगा रहा; उसने उनसे मुँह नहीं मोड़ा।" इसलिए उसने बाल के उस पवित्र पत्थर से छुटकारा पा लिया, लेकिन फिर भी वह यारोबाम की झूठी पूजा का पालन करता रहा।

उसने यहोशापात और एदोम के राजा को मोआब से लड़ने में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया, जिसने उत्तरी साम्राज्य के नियंत्रण के खिलाफ विद्रोह किया था । आपने इसके बारे में 2 राजाओं के अध्याय 1 के श्लोक 1 में पढ़ा: "अहाब की मृत्यु के बाद, मोआब ने विद्रोह किया..." और इसी तरह अध्याय 3 में आप पाते हैं कि यहोराम मोआब के खिलाफ लड़ने में उसकी मदद करने के लिए यहोशापात और एदोम के राजा को आमंत्रित करता है, और वे उस लड़ाई में सफल हैं. लेकिन फिर बाद में, एक और लड़ाई में जिसमें यहूदा का अहज्याह सीरियाई लोगों के खिलाफ उनके साथ शामिल हो गया, वह घायल हो गया - यह 2 राजा 8:29 है। पद 28 कहता है: "अहज्याह अहाब के पुत्र योराम के साथ गिलाद के रामोत में अराम के राजा हजाएल के विरुद्ध युद्ध करने गया। अरामियों ने योराम को घायल कर दिया; इसलिए राजा यहोराम उन घावों से उबरने के लिए यिज्रेल लौट आया, जो रामोत में अराम के राजा हजाएल के साथ युद्ध में अरामियों ने उसे पहुंचाए थे। तब यहूदा का राजा यहोराम का पुत्र अहज्याह अहाब के पुत्र योराम को देखने के लिये यिज्रेल को गया क्योंकि वह घायल हो गया था। इसलिए वह सीरियाई लोगों के खिलाफ लड़ाई के बाद उबरने के लिए यिज्रेल जाता है, लेकिन जब वह वहां होता है, तो उस पर येहू द्वारा हमला किया जाता

है। इसके बारे में हमने पहले बात की थी जहां येहू को भविष्यवक्ता के बेटे ने बताया था कि उसे राजा बनना चाहिए। तब येहू ने योराम के विरुद्ध षड्यन्त्र रचा और वह आया और उसे मार डाला, और अहज्याह भी उसी समय मारा गया। यह एक महत्वपूर्ण घटना है क्योंकि उत्तर के राजा और दक्षिण के राजा दोनों एक साथ मारे गए - 841 ईसा पूर्व, येहू के हाथों।

ई. यहोशापात और यहोराम के अधीन यहूदा ठीक है, आपकी शीट पर "ई" है: "यहूदा यहोशापात और यहोराम के अधीन," जो लगभग इज़राइल में ओम्री के राजवंश के समानांतर है। इसलिए हम यहूदा के दक्षिणी साम्राज्य की ओर बढ़ते हैं। वैसे भी, आप देखते हैं कि यह ओमरी के राजवंश के समानांतर है। यहोशापात और यहोराम के अधीन यहूदा लगभग ओम्री के राजवंश के समानांतर है इसलिए जहां तक समय का सवाल है "ई" वास्तव में "डी" के समानांतर है। हमें तो बस आगे-पीछे चलना है. हम इतिहास में उत्तरी साम्राज्य के साथ कुछ हद तक आगे बढ़ते हैं, फिर दक्षिणी साम्राज्य में वापस आते हैं, फिर दक्षिण में इसी समय के साथ आगे बढ़ते हैं।

चलिए दस मिनट का ब्रेक लेते हैं.

एलिसिया मैकडोनाल्ड द्वारा लिखित
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा संपादित
डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा अंतिम संपादन
डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा पुनः सुनाया गया